An International Peer Reviewed & Referred
INTERNATIONAL JOURNAL
OF EDUCATIONAL RESEARCH STUDIES

अध्यापक शिक्षा में शांती और एकता के लिए विविध कौशल्य एवं उपक्रम विवेचन.

प्राचार्य, डॉ.सुरेंद्र चंद्रकांत हेरकळ
माईर्स,एम्.आय.टी.संत ज्ञानेश्वर बी.एड. कॉलेज,
आळंदी ,पुणे, महाराष्ट्र,-४११०३८(भारत)

उद्देश्य : १. शांती एवं एकता के लिए अध्यापक शिक्षा में निहीत कौशल्योंका परिचय करा देना ।

२. शांती एवं एकता के लिए अध्यापक शिक्षा में निहीत पाठयक्रम के अनुरूप उपक्रमोंका विवेचन करना ।

आज की युग में फैले हुए आक्रमकता, अत्याचार, भ्रष्टाचार आदि की पार्श्वभूमीपर विश्वशांती एक सुंदर सपना है। इस सपने को साकार करने के लिए हम न जाने कितने युगोंसे प्रयास कर रहे है, फिर भी उस सपने तक हम नही पहुँच पाते इसीलिए आज शिक्षा के ध्येयोंमें शांती और एकता का समावेश किया गया है। संविधान के अनुसार राष्ट्रीय ध्येय और उन्हीं ध्येयों के अनुसार शिक्षा के ध्येय निश्चित किये जाते है। और शिक्षा के ध्येयों तक पहुँच ने के लिए अध्यापक शिक्षा निश्चित ही महत्त्वपूर्ण है। इस अध्यापक शिक्षा में शांती तथा एकता के लिए कुछ उपक्रम तथा कुल कौशल्योंका समावेश कर सकते है, जो पुणे विश्वविद्यालय ने किये है। शिक्षा विद्वानोंने हमेशा शांती के मार्ग का पुरस्कार किया है। भारत को अगर शक्तीशाली बनना है तो शांती के मार्ग में क्रमण कर साथ-साथ एकता का भी निर्माण करना होगा ।

अध्यापक शिक्षा और शांती एवं एकता :-

भारत में अध्यापक शिक्षा इस विषय को अनन्य साधारण महत्त्व दिया गया है ।राष्ट्र के हित के लिए तथा राष्ट्र की उनत्ती के लिए एकता का महत्त्व बहुत है । और एकता प्रस्थापित करने के लिए शांती

का होना अनिवार्य है। भारत में विभिन्न प्रान्त, धर्म, भाषा, संस्कृती और परंपराएँ इन सभी के कारण विविधता पाई जाती है। इस विविधता में एकता प्रस्थापित करना यह एक समस्या है, यह समस्या सुलझने की दृष्टी से हर एक नागरिक महत्त्वपूर्ण है । If the fuel is poor, How can the be bright. देश का हरएक नागरिक अगर अच्छा नहीं है, तो पुरी राष्ट[a] कैसे हो सकता है ? और यही एक एक नागरिक तैयार करने का कार्य शिक्षा का है।

भारत में अध्यापक शिक्षा में शैक्षिक तत्वज्ञान के अंतर्गत इस विषय का समावेश किया गया है । तथा राष्ट्रभाषा अध्यापन में भी यह विषय अंर्तभूत है।

भारतीय नागरिक के लिए बातें

- नेतृत्व का प्रशिक्षण
- कुशल कारागीरीका प्रशिक्षण
- सार्वजनिक हित को प्राधान्य
- राष्ट्रीय विकास में योगदान
- राष्ट्रीय एकात्मता के लिए प्रयत्न

यह सभी बातें पाठयचर्या में निहीत हैं। तकि छात्र अपने कर्तव्य को जान सके और निभा सके । पाश्चात्य तथा भारतीय दोन्हीं शिक्षाविदोंनो शांती को महत्त्व दिया है। इसमें कुछ उल्लेखनीय नाम है। पूज्यनीय महात्मा गांधी जी, स्वामी विवेकानंद,रविंद्रनाथ टागोर , अरस्तू, प्लेटो इन सभी ने शिक्षा के माध्यम से शांती तथा एकता की स्थापनापर बल दिया है ।

अध्यापक शिक्षा के लिए कौशल्य :-

शांती तथा एकता के लिए अध्यापक शिक्षा के स्नातक तथा निष्णात दोनोंही स्तरोंपर प्रयत्न आवश्यक है क्यूँ की यही वह लोग है जो देश भविष्य बनाने में सहायता करनेवाले है । इन प्रशिक्षणार्थीयोंमें कुछ कौशल्योंका विकसन आवश्यक है।

१. **विचार कौशल्य** :- छात्रोंको शिक्षा देने का अर्थ यह नहीं हैं कि उन्हें कुछ सिखाना बल्कि शिक्षा व्दारा उनकी विचार प्रक्रिया को उत्तेजित करना अत्यावश्यक है ।

अ. समीक्षात्मक विचार : किसी भी समस्या को समझना, समस्यांतर्गत तथ्य को जानना यह समीक्षात्मक विचार है ।

ब. सर्जनशील विचार : किसी भी समस्या के सुलझाने के अभिनव तरिके बताना, किसी प्रश्न के बहुविध उत्तर देना, एक ही समस्या को अलग-अलग दृष्टिकोन से देखना यह सर्जनशील विचार है

। इस विचार कौशल्य का विकसन करने के लिए हम सर्जनशीलता विकसन के तंत्रोंका उपयोग कर सकते है। जैसे - १. बुध्दिमंथन

२. भिन्नावयन

३. गुणधर्म सूचीकरण

क. जानकारी की उपयोगिता (Information handing): परीकल्पना की रचना करना एवं उसका परीक्षण, बहुविध पर्यायोमेंसे उचित पर्याय चुनाव करना यही जानकारी की उपयोगिता है।

२. **संवाद कौशल्य** :- सामाजिक आंतरक्रिया के लिए संवाद कौशल्य अत्यावश्यक है ।

अ. सादरीकरण कौशल्य : अपनी अभिनव कल्पना को स्पष्ट रूप से दुसरोंके सामने प्रस्तुत करना, अपने विचार सार्थ रूप से प्रकट करना यही सादरीकरण कौशल्य है ।

ब. क्रियाशील श्रवण : दुसरोंके विचारोंका अवधानपूर्वक श्रवण करना, दूसरोंके दृष्टिकोन को स्पष्ट रूप से समझना, दूसरों की बातों में जो तथ्य है उसे श्रवण की माध्यम से पूरी तरह से जानना यह क्रियाशील श्रवण है।

क. अशाब्दिक संवाद : दुसरोंके दृष्टिकोन को शब्द के बिना सिर्फ शरीर भाषा (Body language)के माध्यम से समझना ।

३. **व्यक्तिगत कौशल्य** :- समाज का केंद्रबिंदू व्यक्ती है । व्यक्ती को समाज से जुडे रहने के लिए सामाजिक कौशल्योंके साथ-साथ व्यक्तिगत कौशल्योंकी भी आवश्यकता है।

अ. सहकार्य : किसी विशेष ध्येय प्राप्ती के लिए अन्य लोगों के समवेत सहयोग से परिणामदायी कार्य करना और निश्चित एक ही ध्येय के लिए दल में कार्य करनेकी या कौशल्य क्षामता बढना ।

ब. समायोजन क्षामता : किसी भी परिस्थितीमें सकारणता और सबूत के प्रकाश में मतपरिवर्तन के लिए तैयार रहने की क्षामता निर्माण करना ।

क. स्वयंशिस्त : परिणामकारक रूप से समय नियोजन तथा स्वयं में सभी कार्य में अनुशासन रखने की क्षामता बढाना ।

शांती एवं एकता के लिए उपक्रम -

अध्यापक शिक्षा में दस मूलभूत घटक तथा केंद्रिय तत्वोंका समावेश किया गया है ही सिर्फ उन मूल्योंको छात्रों तक पहुँचाने की दृष्टी से विभिन्न उपक्रमों की आवश्यकता है ।

शांती और एकता के लिए जो गुण आवश्यक है उन गुणोंके विकास के लिए पुणे विश्वविद्यालय में शिक्षणशास्त्र की पाठयचर्या में कई महत्त्वपूर्ण विषयों का समावेश है,

शांती एवं एकता के लिए आवश्यक गुण	अध्यापक शिक्षा में अंतर्भूत विषय	विभिन्न उपक्रम
नेतृत्व	शैक्षिक व्यवस्थापन	◆ संघ में कार्य ◆ कार्य का विकेंद्रीकरण ◆ कार्यक्रमोंका आयोजन ◆ भूमिका पालन (शिक्षक दिन)
जनतंत्र का महत्त्व	शैक्षिक तत्वज्ञान और समाजशास्त्र	◆ छात्र प्रतिनिधी संसद ◆ विद्यालयीन स्तर पर चुनाव ◆ प्रजासत्ताक दिन तथा गणतंत्र दिन
समता	शैक्षिक तत्वज्ञान और समाजशास्त्र	◆ धार्मिक स्तरपर आर्थिक स्तरपर फैले हुए विषमता का ज्ञान ◆ डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम जैसे महान व्यक्तियोंके व्याख्यान
स्वतंत्रता	तत्वज्ञान और व्यवस्थापन	◆ भाषण तथा अभिव्यक्ती स्वातंत्र ◆ निर्णय स्वातंत्र
राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रनिष्ठा	विषय शिक्षण शैक्षिक तत्वज्ञान	◆ क्रांतीवीरों के कार्य की पहचान
अन्य धर्मीयों के प्रति आदर	शैक्षिक तत्वज्ञान	◆ सभी धर्मोके तत्वों की जानकारी
अन्य राज्यों के प्रति आदर	हिंदी एवं विषय शिक्षण	◆ अन्य राज्योंकी जानकारी ◆ अन्य संस्कृतीयोंकी पहचान
मानवी हक्क	शैक्षिक तत्वज्ञान	◆ सभी अधिकारों से परिचय RTI,RTE ◆ बोधपर व्याख्यान
जागतिक स्तर पर विचारोंका आदान-प्रदान	शैक्षिक तत्वज्ञान	◆ आंतरराष्ट्रीय परिषदों का आयोजन ◆ डॉ. रघुनाथ माशेलकर एवं डॉ. विजय भटकर आदि जैसे लोगों के व्याख्यान
अहिंसात्मक पर्याय	शैक्षिक तत्वज्ञान	◆ गांधी जयंती के अवसर - शांती सभा अध्यात्म का ज्ञान

उपर्युक्त लेखन से जिन कौशल्य तथा उपक्रमोंका विवेचन किया है उन उपक्रमोंका आयोजन अगर हम अध्यापक शिक्षा में सही तरह से कौशल्यपूर्वक उपयोजन करेंगे तो निश्चितही संसार में शांती और एकता बनाये रखने में अपना सहयोग दे पायेंगे ।

संदर्भ सूची :

http://unesdoc.unesco.org/ images/0011/001143.pdf.

http://www.mitsog.com / htmls/events.html

http://www.google.co.in/peace

http://www.mitpune.com/mit.

http://www.unipune.ac./B.Ed./2008.

http://www.world peacecenter.com/peace

****